
Kiyadyudhanah Mrityugatah

कियद्-युधानाः मृत्युगताः

Document Information

Text title : kiyadyudhAnAH mRRityugataH

File name : kiyadyudhAnAHmRRityugataH.itx

Category : misc, sanskritgeet

Location : doc_z_misc_general

Author : Original Asamese Bhupen Hazarika, Sanskrit Ranjan Bezbaruah

Transliterated by : Ranjan Bezbaruah

Proofread by : Ranjan Bezbaruah ranjanbaruah at gmail.com

Translated by : Dr. Muna Muna BarA (Hindi)

Description-comments : Kato Jowanar Mrityu Halo (Assamese) by Dr. Bhupen Hazarika.

Dedicated to the Nation

Latest update : December 9, 2021

Send corrections to : sanskrit@cheerful.com

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

Please help to maintain respect for volunteer spirit.

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

December 9, 2021

sanskritdocuments.org

कियद्-युधानाः मृत्युगताः



कियद्-युधानाः मृत्युगताः?

हतयौवनाः नैके हा!

तन्-मृत्युः ह्यपराजेयः,

ततो मृतः नासं नु कुतः ?

श्रुता हिमवतः कथा अमेया

प्रहरिणः किल भारत्याः,

अथ मृतबलाः किल वदन्ति

काम्या जागरिता वाहिनी

अहो! 'भारत-सीमान्तः' लोकितः,

येन शत्रोः पशुत्वं ज्ञापितं

अथ मृतमौनिशूरसेनायै

अश्रोः अश्रुणोऽञ्जलिरर्पितः।

कियद्-युधानाः मृत्युगताः?

कुतः रिक्त-पितृ-सुहृदयम्,

मातृवक्षः सुतरहितम्?

रक्तसिन्दूरैः योषितः

वासनाविरहिताः कुतश्च ?

कियद्-युधानाः मृत्युगताः?

प्रतिशूरं रक्तिमो बिन्दुः,

जातः अनन्तसाहससिन्धुः;

तद्-दुर्जेयसाहसलहर्या

विजयप्रतिज्ञा ज्ञापिता ।

हिन्दी भावार्थ -

कितने जवान चल बसें?

किसके यौवन चले गये?
वो मौत है अपराजेय
काश मैं भी होता इनमें से ?

सुने हिमालय भारत की प्रहरी,
सुने थे बचपन मे कहानी,
पर मृत जवानों ने आवाज दी,
चाहिए चिर जाग्रत एक वाहिनी !

आज कामें-सीमान्त को देखा,
और शत्रुओं के पशुत्व पहचाना,
मेरे आखें जो अश्रु से भरे,
उन शत मौन जवान के लिए ।

कितने पिता पुत्रों को खोए,
कौन माताओं के हृदय सुने हो गए,
सुहाग किसके उजड़े,
किसके आशा अपूर्ण रहे?

हर जवान रक्त के बुंद है,
जो साहस के अनन्त सिंधु है,
उस साहस के दुर्जेय लहर ने,
अर्पण किए जय की वचन से!

मूलरचना स्वरश्च, डॉ भूपेन हजारिका (१९६२)
अनुवादकः कण्ठस्वरश्च - रञ्जनः बेजबरुवाः ।
अनुवादसम्पादनम् - डॉ नारायणदत्तमिश्रः ॥

हिन्दी अनुवाद- डॉ मुन मुन बरा

Dedicated to the Nation

Sanskrit Rendition of Original Assamese Composition of
Bharat Ratna Dr. Bhupen Hazarika (in 1962)


Sanskrit Translation and Vocal Rendition by Ranjan Bezbaruah
Translation Editor: Dr Narayan Dutt Mishra


Courtesy: Bhupen Hazarika Cultural Trust,

Dr Bhupen Hazarika Foundation;
Sanskrit Bhasha Vikash Mancha, Nagaon;
Amiya Devi Kala Kendra, Dergaon;
Dept. of Sanskrit, Gauhati University

Conceived, prepared and published by
Lokbhasha Prachar Samitih, Bharat on the grand
occasion of India's 75th Indendence Day, 2021.

**<https://youtu.be/ZrN1aiHEU-M>

——
Kiyadyudhanah Mrityugatah
pdf was typeset on December 9, 2021

——
Please send corrections to sanskrit@cheerful.com

